इकाई 13 मुगल शासक वर्ग

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

इकाई 12 में हमने राज्य संबंधी मुगल सिद्धांत के विकास और कार्य पद्धति पर विचार किया। इस इकाई में हम औरंगजेब के काल तक के मुगल शासकीय वर्ग के ढांचे और कार्य पद्धति की प्रमुख विशेषताओं पर विचार करने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- शासकीय वर्ग के उद्भव और विकास के बारे में बता सकेंगे,
- शासक वर्ग के प्रजातीय संघटन को समझ सकेंगे,
- इसके संगठन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- शासक वर्ग के बीच साम्राज्य के राजस्व स्रोतों के बंटवारे के बारे में जान सकेंगे, और
- शासकीय वर्ग की जीवन पद्धति से अवगत हो सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

मुगल शासक वर्ग बहु-प्रजातीय, बहु-धार्मिक और बहु-प्रांतीय था। सिद्धांततः सम्राट इस वर्ग का गठन करता था। मुगल शासक वर्ग को आम तौर पर कुलीन वर्ग के रूप में जाना जाता था और इसमें नागरिक और सैनिक अधिकारी दोनों शामिल होते थे। उन्हें मनसब या पद प्राप्त होता था और उन्हें नगद धन या विभिन्न क्षेत्रों (जागीर) से प्राप्त राजस्व के माध्यम से वेतन मिलता था। इस प्रकार मनसबदारों (कुलीनों) की कुल संख्या से राजनीति और प्रशासन के साथ-साथ साम्राज्य की अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता था।

13.2 बाबर और हुमायूं के अधीन शासक वर्ग

बाबर के साथ हिंदुस्तान आने वाले शासकीय वर्ग में तुरानी (मध्य एशियाई "बेग") और कुछ ईरानी शामिल थे। पानीपत के युद्ध (1526) के बाद सिकंदर लोदी के कुछ अफगान और भारतीय कुलीनों को भी शासनतंत्र में ऊंचा स्थान दिया गया। उन्हें जल्द ही विश्वास में ले लिया गया और उन्हें महत्वपूर्ण कार्य सौंपे गये। कई स्थानीय सरदारों ने भी बाबर

की अधीनता स्वीकार कर ली और आगे होने वाले युद्धों में उसके मित्र बने रहे। इस प्रकार पानीपत के युद्ध के बाद बाबर के अधीन शासक वर्ग शुद्ध रूप से तुरानी नहीं रह गया। बाबरनामा से पता चलता है कि कुल 116 कुलीनों में से 31 भारतीय थे, जिसमें अफगान और शेखजादा भी शामिल थे।

हुमायूं के शासनकाल के आरंभिक वर्षों में भारतीय कुलीन (अफगान) मुगलों का साथ छोड़ गये और गुजरात के बहादुर के साथ मिल गये। हालांकि 1540-55 के बीच हुमायूं के कुलीन वर्ग में महत्वपूर्ण बदलाव उस समय आया जब अधिकांश तुरानी कुलीनों ने उसका साथ छोड़ दिया और मिर्जा कामरान के साथ जा मिले। ईरान जाते समय केवल छब्बीस व्यक्तियों ने उसका साथ दिया जिनमें से सात ईरानी थे। लेकिन ईरान में उसके प्रवास के दौरान कई और ईरानी उसके साथ मिल गये। उन्होंने ईरान से लेकर कांधार और काबुल प्राप्त करने में हुमायूं का साथ दिया। काबुल में कई ईरानियों ने हुमायूं का साथ दिया। हुमायूं के काबुल प्रवास के दौरान 1545-55 में अनेक ईरानी उसकी सेवा में आये और इस काल में ईरानी अमीरों की संख्या काफी बढ़ गई।

कुलीन वर्ग में ईरानियों के बढ़ने के साथ-साथ हुमायूं ने नये तुरानी कुलीनों को भी शामिल किया। पुराने कुलीनों की शक्ति में संतुलन पैदा करने के लिए उसने निम्न पदों पर आसीन तुरानी कुलीनों को संरक्षण देना शुरू किया और इस प्रकार अपनी स्थिति मजबूत करने का प्रयत्न किया। भारत लौटते समय हुमायूं के साथ 57 कुलीन व्यक्ति आये थे जिसमें 27 तुरानी और 21 ईरानी थे। 1545 और 1555 के बीच मिर्जा कामरान के साथ हुए युद्ध और भारत के अभियान में इन लोगों ने निष्ठापूर्वक हुमायूं का साथ दिया। उनकी इस निष्ठा के बदले इन कुलीनों को आम तौर पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी गयीं।

ईरानियों तथा निम्नपदीय तुरानियों को उच्च पद देकर हुमायूं को एक निष्ठावान शासक वर्ग निर्मित करने में मदद मिली जिसने उसे भारत को पुनः जीतने में सहायता की। उसके शासक वर्ग का प्रभावशाली वर्ग अब भी वर्ग और परिवार पर आधारित छोटे-छोटे समूहों तक सीमित था जिसकी जड़ें अभी भी मध्य एशियाई परंपराओं में निहित थीं।

ऐसा प्रतीत होता है कि बाबर और हुमायूं के अधीन शासक वर्ग विकास की अवस्था में ही था और अभी यह एक ऐसे अनुशासित और प्रभावकारी संगठन के रूप में विकसित नहीं हो सका था, जो भारत में साम्राज्य निर्माण के लिए आवश्यक था। बाबर और हुमायूं ने इसके संघटन में कुछ परिवर्तन किए पर वे उन्हें पूरी तरह से अपने प्रति निष्ठावान और अधीनस्थ न बना सके।

13.3 अकबर के अधीन विकास

अकबर के शासन काल के आरंभिक वर्षों में भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। तुरानी और ईरानी दोनों विदेशी तत्वों का वर्चस्व बना रहा। बैरम खां के निष्कासन के बाद दरबार में संकट उत्पन्न हुआ और तुरानी कुलीन वर्ग ने विद्रोह कर दिया। उनके दबाव को संतुलित करने के लिए अकबर ने दो नये समुदायों—भारतीय मुसलमानों और राजपूतों—को अपने कुलीन वर्ग में जगह दी। संकट के दौरान निष्ठावान रहने के कारण उसने ईरानियों को भी ऊंचे पद देकर सम्मानित किया। हुमायूं और बैरम खां के अधीन पहले से ही ईरानी मुगलों की सेवा कर रहे थे। इस काल में नए ईरानी नौकरी की खोज में भारत आये उनके ईरान से भारत आने के पीछे कई कारक कार्य कर रहे था। सबसे महत्वपूर्ण कारक यह था कि सोलहवीं शताब्दी के दौरान सफवी ईरान का धार्मिक माहौल सुन्नियों के अनुकूल नहीं था। सफवी शासकों द्वारा दंड दिए जाने के भय से काफी लोग सुरक्षा की खोज में भारत आये। इनमें से कई प्रशासनिक मामलों में दक्ष थे और ईरान के जाने माने परिवारों से संबद्ध थे। भारत में उनका स्वागत किया गया और अकबर ने उन्हें अपनी सेवा में रखा और उपयुक्त पद दिए। इनमें से कुछ लोगों के संबंधी पहले से मुगल दरबार में मौजूद थे तथा कार्य कर रहे थे। इसके अलावा कुछ लोग यह जानकर कि मुगल दरबार में योग्यता का सम्मान होता है, बेहतर मौके की तलाश में चले आये थे। इस प्रकार मुगल शासकीय वर्ग में ईरानियों की स्थिति न केवल स्थिर और मजबूत हो गयी बल्कि वह अपने हितों को सुरक्षित रखने की स्थिति में बने रहे।

1561 में बैरम के निष्कासन के बाद से अकबर ने अपनी सेवा में राजपूतों और शेखजादों कुलीनों के संबंधियों को नियुक्त करना शुरू कर दिया। इन समुदायों को अपनी सेवा में लेने

के लिए उसने उन्हें प्रसन्न करने और विश्वासपात्र बनाने के लिए कुछ कदम उठाये। उदाहरणस्वरूप उसने राजपूत सरदारों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये, तीर्थ कर (1562) और जजिया (1564) समाप्त कर दिया, जिसे पहले हिंदुओं पर लाद दिया गया था। उजबेक विद्रोह को कुचलने के बाद और उनकी संख्या काफी हद तक कम करने की दृष्टि से राजपूतों के प्रति अकबर के रवैये में अभूतपूर्व परिवर्तन आया और उनको अधिक संख्या में अमीर वर्ग में अपनाया गया।

1575-80 के बीच अकबर ने साम्राज्य के लिए भारत के मुसलमान समुदायों का व्यापक समर्थन प्राप्त करने की दृष्टि से उन्हें आगे बढ़ाना और दोस्त बनाना शुरू किया। इसके लिए उसने बहुत से मित्रतापूर्ण कदम उठाये।

बोध प्रश्न 1

1. बाबर और हुमायूं के काल में मुगल शासक वर्ग के विकास की चर्चा कीजिए।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

2. अकबर के काल में मुगल शासक वर्ग की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

13.4 मुगल शासक वर्ग का संघटन

बाबर, हुमायूं और अकबर के आरंभिक वर्षों के शासन काल के साथ विकास का पहला चरण पूरा हुआ और मुगल शासक वर्ग में कुछ खास प्रजातीय समुदाय उभर कर सामने आये। इनमें तुरानी, ईरानी, अफगान, शेखजादा और राजपूतों के साथ-साथ दक्खनी (बीजापुरी, हैदराबादी और मराठी) भी महत्वपूर्ण थे। अतः यह एक "अंतर्राष्ट्रीय" शासक वर्ग था, नियुक्ति के लिए "राष्ट्रीयता" का कोई बंधन नहीं था। इसके बावजूद केवल योग्यता और दक्षता के बल पर ही कोई इस वर्ग का सदस्य नहीं बन सकता था, नियुक्ति के लिए कुल और परिवारिक संबंधों पर खास ध्यान दिया जाता था और आम तौर पर साधारण व्यक्ति के लिए, चाहे वह कितना भी योग्य क्यों न हो, समाज के इस अभिजात्य वर्ग में शामिल होना आसान नहीं था।

खानजादा उन अधिकारियों (मनसबदारों) के बेटे और संबंधी थे जो पहले से मुगल सेवा में थे यही लोग मनसबदारी के सबसे प्रमुख दावेदार थे। पूरे मुगल काल के दौरान शासक वर्ग में लगभग आधी नियुक्तियां इस वर्ग में से होती थीं। बचे हुए आधे में ऐसे लोग थे जिनका परिवार पहले से मुगलों की सेवा में नहीं था। जमींदार या स्वायत्तराजा इनमें से एक थे। हालांकि दिल्ली सल्तनत के समय से ही वे राज्य सेवा में नियुक्त किये जाते रहे थे पर अकबर के शासनकाल में उन्हें अधिक महत्व प्राप्त हुआ और उन्हें साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में मनसब और जागीरें प्राप्त हुईं। ये जागीरें उनके पैतृक राज्य या जमींदारी क्षेत्रों से भिन्न थीं, जिन्हें अब वतन जागीर (देखिए इकाई 15) कहा गया।

दूसरे राज्यों के कुलीनों और वरिष्ठ पदाधिकारियों को भी उनके अनुभव, स्तर और प्रभाव के अनुरूप मुगल शासक वर्ग में शामिल किया गया। खासकर, दुश्मन राज्य के सेनानायकों को बड़े पद का प्रलोभन देकर अपने स्वामियों को छोड़कर मुगल शासक वर्ग में शामिल

होने के लिए उकसाया गया। मुगल शासक वर्ग में एक छोटा-सा समूह खत्रियों, कायस्थों आदि जैसी जातियों का भी था, जो लेखा विभाग से संबद्ध होते थे। आम तौर पर उनकी नियुक्ति वित्त विभाग के निचले पदों पर होती थी, पर उनकी पदोन्नति भी हो सकती थी। अकबर के अधीन टोडरमल और औरंगजेब के अधीन राजा रघुनाथ इसी कोटि में आते थे। उन्होंने दीवान के रूप में काम किया और ऊंचे मनसब प्राप्त किये।

मुगल सेवा में विद्वान, संतों/सुफियों, दार्शनिकों आदि को भी बड़े ओहदे और पद दिए जाते थे। अकबर के अधीन अबुल फजल, शाहजहां के शासन काल में सैदुल्लाह खां और दनिशमंद खां और औरंगजेब के काल में हकीम अबुल मुल्क तुनी, फाजिल खां आदि इस वर्ग के उल्लेखनीय व्यक्ति थे।

13.4.1 प्रजातीय और धार्मिक समुदाय

जैसा कि पहले बताया जा चुका है मुगल शासकीय वर्ग में स्पष्ट रूप से कुछ प्रजातीय समुदाय थे, जैसे तुरानी, ईरानी, अफगान, शेखजादे, राजपूत और मराठे। इन्हीं के बीच से नयी नियुक्तियां हुईं। मुगल सेवा में मुख्य रूप से इन्हें ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण नियुक्त किया गया पर अंशतः (खासकर राजपूतों के मामले में) एकीकृत साम्राज्यी सेवा में इन सभी तत्वों को एकबद्ध करने की यह एक सुनियोजित साम्राज्यी नीति का एक परिणाम था। इस उद्देश्य से अक्सर विभिन्न समुदायों के अधिकारियों को एक वरिष्ठ पदाधिकारी के निरीक्षण में काम करना पड़ता था। अकबर की सुलह कुल की नीति का एक उद्देश्य विभिन्न धार्मिक मतों के लोगों जैसे सुन्नियों (तुरानी और शेखजादा), शियाओं (बहुत से ईरानी) और हिन्दुओं (राजपूतों) को साथ लेकर चलना था और इन संप्रदायों के बीच के मतभेदों को कम से कम करना था ताकि राज्य के प्रति इनकी निष्ठा में कमी न आये।

13.4.2 विदेशी तत्व: तूरानी और ईरानी

मुगल शासकीय वर्ग में तुरानी (या मध्य एशियाई) और ईरानी (इन्हें खुरासानी और ईराकी भी कहा जाता था) दो प्रमुख विदेशी समुदाय थे। आइने अकबरी के अनुसार मूलतः अकबर के 70% कुलीन सदस्य विदेशी थे। अकबर के उत्तराधिकारियों के शासन काल में भी विदेशियों का प्रतिशत काफी ज्यादा रहा और ईरानियों का वर्चस्व बना रहा। जहांगीर के शासन काल के आरंभिक वर्षों में मिर्जा अजीज कोका ने आरोप लगाया कि सम्राट ईरानियों और शेखजादों को जरूरत से ज्यादा महत्व दे रहे हैं जबकि तूरानियों और राजपूतों को अनदेखा किया जा रहा है। हालांकि शाहजहां ने मुगल वंश के मध्य एशियाई संपर्क पर जोर देने की भरपूर कोशिश की, पर इसका ईरानियों की स्थिति पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा। बर्नियर का कहना है कि औरंगजेब के कुलीन वर्ग में अधिकांश ईरानी लोग थे, टेवर्नियर का कहना है कि इन लोगों ने मुगल साम्राज्य में सर्वोच्च पद प्राप्त कर रखे थे। अतहर अली का मानना है कि अकबर के काल से ही विदेशों से सीधे आने वाले कुलीनों की संख्या में कमी आने लगी। उनके अनुसार औरंगजेब के लंबे शासन काल में यह कमी और भी स्पष्ट हो गयी। उजबेक और सफवी साम्राज्यों का पतन और लंबे समय तक औरंगजेब का दक्खन मामलों में उलझे रहना तथा उत्तर-पश्चिम की ओर आक्रामक सैनिक नीति न अपनाना आदि कुछ महत्वपूर्ण कारण कहे जा सकते हैं, जिनके चलते प्रत्यक्ष विदेशी नियुक्तियों में गिरावट आई। पर दक्खन सल्तनतों से ईरानियों का आना जारी रहा और इस प्रकार कुलीन समुदाय में उनका वर्चस्व बना रहा। दक्खन के ईरानी कुलीनों में मुकर्रब खां, किजिलबाश खां और मीर जुमला (शाहजहां के अधीन), अली मर्दान खां हैदराबादी, अब्दुर रज्जाक लारी और महाबत खां हैदराबादी (औरंगजेब के अधीन) प्रमुख थे। सम्राट के सुन्नी कट्टरपंथ का भी ईरानियों की स्थिति पर प्रभाव नहीं पड़ा।

13.4.3 अफगान

मुगल अफगानों पर विश्वास नहीं करते थे, खासकर हुमायूं की पुनःस्थापना के बाद से उन्हें संदेह की निगाहों से देखा जाने लगा था। अकबर ने हमेशा उनसे दूरी बनाये रखी। हालांकि उनकी स्थिति जहांगीर के जमाने में थोड़ी सुधरी, इस काल में खानजहां लोदी को उच्च्व पद प्राप्त हुआ। शाहजहां के शासनकाल में अफगानों का महत्व फिर कम हो गया और खान जहां लोदी के विद्रोह से इसे और धक्का लगा। हालांकि औरंगजेब के शासन काल के अंतिम दिनों में अफगान कुलीनों की संख्या तेजी से बढ़ी। इसका कारण बीजापुर राज्य से इनकी बड़ी संख्या में आना था।

13.4.4 भारतीय मुसलमान

भारतीय मुसलमान शेखजादा के नाम से जाने जाते थे, इनमें बरहा और कम्बुस के सैयुयदों के अतिरिक्त कुछ अन्य महत्वपूर्ण कुल भी शामिल थे।

अकबर के समय से महत्वपूर्ण स्थान पा रहे बरहा और कम्बुस के सैयुयदों का महत्व औरंगजेब के शासनकाल में समाप्त हो गया। खासकर, बारहा के सैयदों की स्थिति ज्यादा खराब हुई। अपनी लड़ाकू योग्यता के कारण उन्हें एक समय मुगल सेना के उग्रगामी दस्तों में रहने का सम्मान प्राप्त हुआ था, उन्हीं पर औरंगजेब ने अविश्वास किया। इसका कारण शायद यह था कि उत्तराधिकार के युद्ध में वे दारा शिकोह के निष्ठावान समर्थक थे।

औरंगजेब के शासन काल के अंतिम वर्षों के कुछ कश्मीरियों को भी महत्वपूर्ण पद प्राप्त हुए, इनायतुल्हा कश्मीरी सम्राट का एक प्रमुख प्रियपात्र कुलीन था।

13.4.5 राजपूत और अन्य हिंदू

जैसा कि पहले बताया जा चुका है अकबर के शासनकाल के दौरान राजपूतों और हिंदुओं को मुगल शासक वर्ग में शामिल किया गया। इनके प्रति अकबर का व्यवहार उदार और मित्रतापूर्ण था। समकालीन स्रोतों से पता चलता है कि आम तौर से राजपूतों को अकबर से लेकर औरंगजेब तक के शासनकाल में सम्मान और प्रतिष्ठा मिलती रही। शाहजहां कट्टर मुसलमान था और अपना कट्टरपंथ दर्शाने के लिए उसने कई कदम उठाए। पर उसके शासनकाल में राजपूत मनसबदारों की संख्या में अपार वृद्धि हुई। औरंगजेब भी एक कट्टर मुसलमान था और अक्सर उस पर हिंदु-विरोधी नीतियों का आरोप लगाया जाता है। पर एक तथ्य यह है कि उसके शासनकाल के आरंभिक वर्षों में शाहजहां के शासनकाल से भी ज्यादा राजपूत कुलीन नियुक्त किये गये। शाहजहां के शासनकाल में किसी राजपूत कुलीन को 7000 जात का पद प्राप्त नहीं था पर औरंगजेब के शासनकाल में मिर्जा राजा जय सिंह और जसबंत सिंह को 7000 जात/7000 सवार के पद पर पदोन्नति दी गयी। इसी प्रकार 1606 में मानसिंह को बंगाल से वापस बुलाये जाने के बाद से किसी राजपूत कुलीन को किसी महत्वपूर्ण प्रांत की जिम्मेदारी नहीं सौंपी गयी थी। 1665 में जय सिंह को दक्खन का वायसरॉय नियुक्त किया गया। इस प्रकार का प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण पद आमतौर पर केवल राजकुमारों को ही दिया जाता था। जसबंत सिंह को भी दो बार (1659-61 और 1670-72) गुजरात का राज्यपाल नियुक्त किया गया। यह ध्यान रखने की बात है कि औरंगजेब के शासनकाल के आरंभिक चरण (1658-78) में थोड़ी गिरावट (21.6%) आने के बावजूद हिंदु मनसबदारों का प्रतिशत अकबर (22.5%) और शाहजहां (22.4%) के शासनकाल के आसपास बना रहा। इसे निम्नलिखित तालिका से और अच्छी तरह समझा जा सकता है।

तालिका-I

कुल मनसबदार	अकबर	शाहजहां	औरंगजेब	
	(1595)	(1628-50)	(1658-78)	(1679-1707)
क) कुल मनसबदार	98	437	486	575
ख) हिंदु	22	98	105	182
क और ख का %	22.5	22.4	21.6	31.6

औरंगजेव के शासन काल के अंतिम चरण (1679-1707) में हिंदु कुलीनों का प्रतिशत 31.6 तक पहुंच गया था। दूसरे शब्दों में विगत वर्षों की तुलना में अब ज्यादा हिंदुओं को मुगल सेवा में शामिल किया गया। इस काल में हिंदुओं का प्रतिशत मराठों के आगमन से बढ़ा और कुलीन वर्ग में वे राजपूतों से आगे बढ़े गये।

13.4.6 मराठे और अन्य दक्खनी

मराठों की नियुक्ति शाहजहां के अहमदनगर अभियान के समय से शुरू हुई। दक्खनी मामलों में मराठों की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण मुगल शासकीय वर्ग में उन्हें तत्परता से नियुक्त किया गया। औरंगजेब ने भी काफी संख्या में मराठों को नियुक्त किया और उनमें से कुछ को ऊंचे पद भी प्रदान किए। मराठा सरदारों को बड़े मनसब देकर अपनी तरफ मिलाने के मुगलों के प्रयास असफल रहे। औरंगजेब के अधीन मराठा कुलीनों की निष्ठा हमेशा अस्थिर रही और मुगल शासक वर्ग में उन्हें कभी महत्व का कोई पद प्राप्त नहीं

हुआ। अन्य दक्खनियों में वे कुलीन शामिल थे जो मुगल सेवा स्वीकार करने से पहले बीजापुर या गोलकुंडा के दक्खनी राज्यों में काम करते थे। उनमें से कुछ भारतीय मूल के थे, जैसे अफगान, शेखजादा या भारतीय मुसलमान। कुछ विदेशी थे जैसे ईरानी और तुरानी। ऐसा लगता है कि प्रथम चरण में औरंगजेब के कुलीन वर्ग में ज्यादा दक्खनियों को नियुक्त नहीं किया गया था। उन्हें निचले दर्जे का कुलीन माना जाता था, दक्खन की प्रथा के अनुसार उनके पूरे वेतन से एक-चौथाई हिस्सा काट लिया जाता था।

हालांकि दूसरे चरण में दक्खनी कुलीनों (बीजापुरियों, हैदराबादियों और मराठों) को बड़ी संख्या में नियुत किया गया। औरंगजेब के शासन के अंतिम वर्षों में दक्खनियों का समावेश इतना ज्यादा हुआ कि पुराने कुलीन वर्ग खानजादों ने अपना असंतोष भी व्यक्त कर दिया

बोध प्रश्न 2

1) मुगल कुलीन वर्ग में राजपूतों की क्या स्थिति थी?

....

....

....

....

....

2) मुगल शासक वर्ग के प्रमुख समूहों के नाम लिखिए?

....

....

....

....

....

13.5 शासक वर्ग का संगठन

मुगल शासकीय वर्ग दो महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं मनसब और जागीर के ढांचे के अंतर्गत संगठित था, जिसने लगभग दो सौ सालों तक मुगल साम्राज्य को संभाले रखा। मनसब व्यवस्था प्रत्यक्ष आदेश के सिद्धांत पर आधारित अर्थात सभी मनसबदार, चाहे उनका ओहदा कुछ भी हो, सीधे मुगल सम्राट के अधीन थे। तकनीकी रूप में मनसब व्यवस्था में मनसब का तात्पर्य पद या ओहदा था। मुगल के अधीन मनसब का कार्यरूप तिहरा था:

मुगल के अधीन मनसब का कार्यरूप तिहरा था:

i) इससे इसके प्राप्तकर्ता (मनसबदार) का पदानुक्रम में स्थान तय होता था,
ii) इसके आधार पर मनसबदार का वेतन निश्चित किया जाता था, और
iii) इसके अंतर्गत मनसबदार को एक निश्चित संख्या में घोड़ों और सेना का रख-रखाव करना होता था। प्रत्येक पदाधिकारी को दोहरा ओहदा जात और सवार प्रदान किया जाता था। जात एक व्यक्तिगत ओहदा होता था जिसके आधार पर मनसबदार का पदानुक्रम तय होता था और इससे उसका व्यक्तिगत वेतन भी निर्धारित होता था। सवार एक सैनिक ओहदा होता था और जिससे मनसबदार द्वारा रखी जाने वाली सेवा की संख्या तय होती थी और इसके आधार पर सेना के रख-रखाव के लिए धन निर्धारित किया जाता था। (विस्तार के लिए इकाई 15 देखिए)।

मुगल मनसबदारों को उनके जात और सवार पद के आधार पर नगद धन या जागीर के रूप में भुगतान किया जाता था।

मनसबदारों की नियुक्ति में राष्ट्रीयता की कोई बाधा नहीं थी। इस पद पर नियुक्ति के लिए खानजादों (पहले से कार्य कर रहे मंनसबदारों के पुत्र और वंशज) का पहला दावा होता था। ईरान और मध्य एशिया से आये लोगों की भी इस पद पर नियुक्ति की जाती थी।

अनुशंसा (तजवीज) के आधार पर भी नियुक्तियां होती थीं। दुश्मन के खेमे को छोड़कर आये सेनानायकों की भी इस पद पर नियुक्ति की जाती थी।

केन्द्रीय मंत्रियों, राजकीय परिवार के राजकुमारों, प्रांतीय राज्यपालों और महत्वपूर्ण सेनानायकों की अनुशंसा पर भी नियुक्ति और पदोन्नति होती थी। (विस्तार के लिए इकाई 15 देखिए)।

13.6 शासक वर्ग के बीच राजस्व स्रोतों का बंटवारा

ए. जान कैसर और शिरीन मूसवी ने दिखाया है कि साम्राज्य के कुल राजस्व स्रोत का 80% 1571 मनसबदारों द्वारा प्राप्त किया जाता था। उच्चस्थ 12 मनसबदारों का साम्राज्य की कुल आय के 18.52% पर नियंत्रण था जबकि बचे हुए 1,149 मनसबदार केवल राजस्व का 30%नियंत्रित करते थे। इस प्रकार अकबर के शासनकाल में राजस्व स्रोत कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में केंद्रित थे। यह केन्द्रीकरण उसके उत्तराधिकारियों के समय भी कायम रहा। ए. जान. कैसर के अध्ययन के अनुसार शाहजहां के अधीन कार्यरत 445 मनसबदार राजस्व के 61.5% पर नियंत्रण रखते थे और इनमें से उच्चस्थ 25 मनसबदारों का 24.5% राजस्व स्रोतों पर नियंत्रण था।

अधिकांशतः कुलीन भू-राजस्व से अपनी आय ग्रहण करते थे। मुगल शासक वर्ग के कुछ महत्वपूर्ण लोगों (जिनकी संख्या काफी कम थी) के पास धन का अत्यधिक संकेंद्रण हो गया था। सवार ओहदे के आधार पर उन्हें जो राशि दी जाती थी उसे वे अपनी सेना के रख-रखाव पर पूरी तरह खर्च नहीं करते थे। इससे कुलीनों के हाथों में धन का और भी सकेंद्रण हो गया।

13.7 शासक वर्ग की जीवन पद्धति

शासकीय वर्ग के पास अपार संपत्ति रहने के कारण वे ठाठ और रईसी का जीवन बिताते थे। उनकी कई पत्नियां होती थीं, उनके पास नौकरों, ऊंटों और घोड़ों का एक पूरा दल होता था। उनके घरेलू मामलों और हरम के रख-रखाव पर काफी धन खर्च किया जाता था। इसके बावजूद उनके पास काफी धन बचा रहता था जिसे वे भव्य भवन और जन सुविधा के कार्य से संबंधित इमारतें बनवाने पर खर्च करते थे। यहां हम कुलीनों द्वारा करवाये गये निर्माण कार्यों की संक्षिप्त जानकारी देने जा रहे हैं।

शेख फरीद भक्करी की जीवनी संबंधित रचना जखीरत-उल ख्वानीन (1642) को पढ़ने से पता चलता है कि मुगल पदाधिकारी और कुलीन अपने निवास के लिए भव्य और आकर्षक भवन बनवाया करते थे। मुरतजा खां शेख फरीद बुखारी अकबर के समय का एक महान भवन निर्माता था। अहमदाबाद में उसने एक सराय, मस्जिद और अन्य इमारतें बनवाई थी। जहांगीर के शासनकाल में अब्दुर रहीम खान खाना, आजम खां, ख्वाजा जहां काबुली आदि महान भवन निर्माता थे।

जहां तक जन सुविधाओं संबंधी निर्माण कार्य का संबंध है हमारे स्रोत बताते हैं कि पूरे साम्राज्य में कुलीनों ने अनेकों सरायें, हम्माम (जन स्नान सुविधा), कुएं, सीढ़ी नुमा कुंआ (बावली), जलाशय, बाजार, सड़कें और बागान निर्मित किए। अकबर के शासनकाल में मुरतजा खान शेख फरीद बुखारी ने लहौर, आगरा आदि कई जगहों पर मस्जिदों, सरायों, खानकाहों और जलाशयों का निर्माण कराया। कुलीनों की पत्नियों और कर्मचारी भी जनसुविधा के निर्माण कार्य में बराबर की रुचि लेते थे। मुगल कुलीनों द्वारा निर्मित धार्मिक और शैक्षिक भवनों, जैसे मस्जिद, मदरसे, खानकाह, मकबरा और मंदिरों (देवराह) का अक्सर जिक्र मिलता है। कुछ हिंदु कुलीनों और पदाधिकारियों ने भी मस्जिदें बनवाई। मुगल काल के दौरान अपने लिए और अपने मृत पूर्वजों के लिए मकबरा बनवाने का आम प्रचलन था। इन भवनों के चारों ओर सुन्दर बागान लगाये जाते थे। इन मकबरों के निर्माण में कभी-कभी कुलीन आपस में होड़ लगा लेते थे। सूफियों के लिए उनके शिष्यों ने भी मकबरे निर्मित किए। मुगल कुलीनों और पदाधिकारियों ने भारत से बाहर भी जन-कल्याण से संबंधित इमारतें निर्मित कीं।

जब भी कोई नया शहर या नगर बसाया गया उसमें शहरी जीवन से संबद्ध सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराई गयीं ताकि वहां लोगों को बसाने के लिए प्रेरित किया जा सके। बागानों का निर्माण कुलीन सांस्कृतिक गतिविधियों का एक अंग था।

ए. जान कैसर ने मुगल आभिजात्य वर्ग के सामाजिक मूल्यों और निर्माण गतिविधि में एक प्रकार का संबंध दिखलाया है। उनका कहना है कि ये मूल्य स्थापित भारतीय परंपराओं की ही निरंतरता थी। इतने व्यापक स्तर पर निर्माण कार्य क्यों किया गया? ऐसा लगता है कि यह एक सम्मान का सवाल था। इन सांस्कृतिक गतिविधियों के पीछे अपने हमवतनों के साथ प्रतियोगिता का भाव भी निहित था। लोग अनन्त काल तक अपने नाम को जीवित रखना चाहते थे। उनकी यह इच्छा उनकी निजी और सार्वजनिक गतिविधियों से स्पष्ट होती हैं। यह सम्भ्रान्त लोग धार्मिक समर्थन के लिए भी निर्माण कार्य में रुचि लेते थे, उदाहरणस्वरूप मस्जिदों का बड़ी संख्या में निर्माण। इसके अतिरिक्त आम लोगों की आशाओं से प्रेरित होकर भी ये निर्माण कार्य करवाते थे। आम जनता इन संपन्न लोगों से यह अपेक्षा रखती थी कि वे सांस्कृतिक पक्ष से जुड़ी जनसुविधाएं उपलब्ध कराएं। उदाहरणस्वरूप अस्पताल, मस्जिद, सराय आदि। जनता यह अपेक्षा रखती थी कि साधन संपन्न और अमीर लोग अपने धन का एक भाग उनकी भलाई के लिए खर्च करें। मुगल कुलीनों ने अपनी यह भूमिका अच्छी तरह निभाई। इसके कारण कुछ मात्रा में ही सही समाज के भौतिक संसाधनों का बंटवारा समाज के लिए हुआ।

अपने उपभोग की आरामदायक वस्तुओं के निर्माण के लिए ये कुलीन अपने कारखाने चलाते थे। इनमें कालीन, सोने से जड़े रेशमी वस्त्र और उच्च कोटि के स्वर्णाभूषण आदि व्यक्तिगत प्रयोग के लिए बनाये जाते थे। इसके अतिरिक्त ये विभिन्न देशों से काफी मात्रा में आरामदायक वस्तुओं का आयात भी करते थे। ब्रिटिश और डच स्रोतों से अनेकों विवरण यह दर्शाते हैं कि यह शासक वर्ग विलासिता की मूल्यवान वस्तुओं की मांग करता था और इसके लिए बड़ी राशि खर्च करता था।

शिकार मनोरंजन और खेलकूद संबंधी गतिविधियों के अतिरिक्त पर्व-त्योहारों, घरेलू शादियों आदि में अपार राशि खर्च की जाती थी।

बोध प्रश्न 3

1) मुगल शासक वर्ग के संगठन का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

2) मुगल शासक वर्ग राजस्व स्रोतों से प्राप्त अपार धन का प्रयोग किस प्रकार करता था?

....

....

....

....

....

13.8 सारांश

इस इकाई में हमने मुगल शासक वर्ग के विकास के विभिन्न चरणों की जानकारी प्राप्त की। आरंभ में इसमें तुरानी बाहुल्य वर्ग का वर्चस्व रहा, पर राजनीतिक जरूरतों के कारण ईरानी, भारतीय मुसलमान, राजपूत, मराठा और अफगानों की भी नियुक्ति इस वर्ग में हुई। इस प्रकार यह शासक वर्ग एक मिले-जुले बहुजातीय व बहुराष्ट्रीय वर्ग के रूप में विकसित हुआ। यह मुगल शासक वर्ग दो महत्वपूर्ण संस्थाओं मनसबदारी और जागीरदारी के

माध्यम से संगठित हुआ। मनसबदारी और जागीरदारी दो ऐसी संस्थाएं थीं जिनके आधार पर मुगल साम्राज्य 200 वर्षों की लंबी अवधि तक कायम रह सका। मनसबदार एक ऐसा शासक वर्ग था जो न केवल धनवान था बल्कि समाज का एक संभ्रान्त वर्ग था। अपने कार्यकाल में ये लोग काफी धन जमा कर लेते थे और अपने परिवार के लिए बड़ी संपदा छोड़ जाते थे।

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 13.2
2) देखिए भाग 13.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 13.4.5
2) देखिए उपभाग 13.4.1 से 13.4.6 तक

बोध प्रश्न 3

1) देखिए भाग 13.5
2) देखिए भाग 13.6 तथा 13.7